

विचार बिन्दु

जिसमें आन्मविश्वास नहीं, उसमें अन्य चीजों के प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है। - विवेकानन्द

बस! इतनी-सी आकंक्षा है

ज

ब पूरा देश लोकतंत्र का महापवन मना रहा है, इस बात की तफ ध्यान जाना भी स्वाभाविक है कि अधिक लोकतंत्र है यह। सामाजिक, हम लोकतंत्र को एक शासन पद्धति के रूप में जानते-गये हैं। अश्रवणलंकार के नाम से कठन को बहुत तरह किया जाता है उसके अनुरूप लोकतंत्र "लोगों की, लोगों द्वारा और लोगों के लिए" सचाकर है। इस कठन में भी सारा बल सकार पर है। माना जाता है कि लोकतंत्र शब्द 'डेमोस' से आया है, जिसका अर्थ है लोग, और 'क्रेटोस' जिसका अर्थ है शक्ति। इस तरह लोकतंत्र को 'लोगों की शक्ति' के रूप में समझा जा सकता है। कह सकते हैं कि लोकतंत्र शासन करने का ऐसा एक तरीका है जो लोगों की इच्छा पर नियंत्रित होता है। हम बचपन से ही यह पढ़ते आये हैं कि लोकतंत्र की पांच प्राथमिकताएँ हैं: सत्त्रं न्यायालिका, निवाचित प्रतिनिधि, नागरिक संसदित, संसदित व्यक्ति, और कानून का शासन। इन पांच प्रमुख विशेषताओं के अलावा भी लोकतंत्र की अन्य अनेक विशेषताएँ हैं, जैसे इसका आधार समाजता का सिद्धांत है, यह आप लोगों की भलाई के लिए काम करता है, इसके द्वारा निवाचित सचाकर जिम्मेदार और जनता के प्रति जवाबदेह होते हैं, साथ संघ और सुरक्षा के आजाए होते हैं, नागरिकों के अधिकार और स्वतंत्रता सुरक्षा रखते हैं, प्रत्येक नागरिक के लिए सुरक्षा और स्वतंत्रता को गारंटी होती है, सबको समान अधिकार प्राप्त होते हैं, जाति, समृद्धि वर्ग या रंग के अधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है, हर नागरिक को मतदान का अधिकार होता है और चुनाव का निपक्ष होते हैं, शासकों को जनता का समर्थन प्राप्त होता है, आदि।

इन सब बांगों के साथ-साथ मुझे लगता है कि लोकतंत्र केवल शासन चलाने और चुनाव करने के तरीके समें व्यक्ति नहीं है बल्कि हम बोलते हैं कि अमुक लोकतंत्र के बाद मिला, हमें अपने संविधान के लागे होने के पहले ही दिन से वह अधिकार मिल गया। चुनाव में बहुत सारे लोग अपनी योजनाओं को बताते हुए हमारे सामने होते हैं और हम उनमें से किसी के पक्ष में अपना मतदान करते हैं कालांतर में इसमें एक और विकल्प जुड़ गया - नोटा का विकल्प। अर्थात हम चाहते हैं कि मैं आपके अधिकार की रक्खा करूँगा। यही मानसिकता आपको लेकिन मौसम क्योंकि चुनाव का चल रहा है, हम फिर से उसी पर लौटते हैं। लोकतंत्रिक व्यवस्था एक आम नागरिक की चयन-संक्षम बनाती है, उसे चुनने का अधिकार देती है। यह बहुत बड़ी बात है और हम स्वाभाविक रूप से इस बात पर गर्व करते हैं कि जहां अन्य कर्दांगे के नागरिकों का लोकतंत्रिक व्यवस्था एक आम लोकतंत्र है जो बाद मिला, हमें अपने संविधान के लागे होने के पहले ही दिन से वह अधिकार मिल गया। चुनाव में बहुत सारे लोग अपनी योजनाओं को बताते हुए हमारे सामने होते हैं और हम उनमें से कोई भी हमें परंपर नहीं है। लेकिन, बहुत खास बात यह है कि लोकतंत्र में चुनाव होने के बाद अधिकार देता है।

यह बहुत अस्वाभाविक बात नहीं है कि हर व्यवस्था की तरह इस लोकतंत्रिक व्यवस्था में भी कुछ विकृतियां घूस आई हैं। लोग, और दल, झूँटे वादे करने लगे हैं, अपने किए हुए वांटों से मुक़्रने लगे हैं, बजाय खुद अपनी योजनाएं या अपने किए हुए काम बताने के, यह बताने में सारी ऊर्जा खपाने में लगे हैं कि उनके प्रतिपक्षी में क्या-क्या कमियां हैं, और ऐसा करते हुए व्यवस्था की धजियां भी उड़ाने लगे हैं।

यह बहुत अस्वाभाविक बात नहीं है कि हर व्यवस्था की तरह इस लोकतंत्रिक व्यवस्था में भी कुछ विकृतियां घूस आई हैं। लोग, और दल, झूँटे वादे करने लगे हैं, अपने किए हुए वांटों से मुक़्रने लगे हैं, बजाय खुद अपनी योजनाएं या अपने किए हुए काम बताने के, यह बताने में सारी ऊर्जा खपाने में लगे हैं कि उनके प्रतिपक्षी में क्या-क्या कमियां हैं, और ऐसा करते हुए व्यवस्था की धजियां भी उड़ाने लगे हैं।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है। प्रतिवर्षान्तरीक प्रत्याशियों को दराना-धमकाना के नागरिकों द्वारा जो अपने चुनावी खर्चों का जो विवरण प्रदर्शित करते हैं, वह अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है। प्रतिवर्षान्तरीक प्रत्याशियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है। प्रतिवर्षान्तरीक प्रत्याशियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। फिर क्यों वह लड़ रहा है? मुझे चुनाव लड़ाकू और चुनाव लड़ाकू में भी हो जाता है। इसलिए वह चुनाव लड़ाकू एक सचिन नागरिक अधिकार है और यह किसी भी तरह सामने वाले की अवधारणा नहीं है। कोई बात नहीं कि यह दास्त कलाकार पर आजित हो जाए, उसकी ज्यानत बजाए हो जाए। चुनाव हमेशा ही जीत-हार के लिए नहीं होती है। उनके माध्यम से संदेश भी दिए जाते हैं। अपनी उम्मीदवारों के प्रयोग से वह कलाकार पूरे देश को एक संदेश दे रहा है - कि नागरिकों से उनके चयन का अधिकार नहीं छीना जाना चाहिए और चुनाव की व्यवस्था निर्णय जारी रही।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से एक स्टैपिंग अप को मॉडेलिंग नहीं करता है। अपने लोकतंत्रिक व्यवस्था के लिए उनके चयन को बहुत अंतर है। कहां वे और कहां ये वाला मामला है! प्रधानमंत्री जो एक मंजे हुए जाने लगे हैं, उनका दल बहुत बड़ा और समर्थ है। अपने लोकतंत्रिक व्यवस्था के लिए उनके चयन को बहुत अंतर है। अपने लोकतंत्रिक व्यवस्था के लिए उनके चयन को बहुत अंतर है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है। प्रतिवर्षान्तरीक प्रत्याशियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के साथ-साथ बल की महिमा भी बढ़ती रहती है।

जो रही है, हालांकि वह भी हासिल तो धन रहे ही होता है। इस उद्देश्य के लिए संवैधानिक संस्थाओं के व्यापारियों को दराना-धमकाना अविवशसनीय रूप से हास्यास्पद होता है। धन के

